ISSN-2230-7540

शिक्षा दर्शन और महिला शिक्षा में महात्मा गांधी का योगदान

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science,
Babu Shobha Ram Government Arts College,
Alwar, Rajasthan

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में, महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन और महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया गया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण शुद्धतावाद की विचारधारा से जुड़ा था। उन्हें एक महान राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक के रूप में जाना जाता है। गांधीजी का मानना था कि सामाजिक प्रगति के लिए शिक्षा का विशेष योगदान है। 'यदि आप एक आदमी को पढ़ाते हैं, तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा। यदि आप एक महिला को पढ़ाते हैं, तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। "गांधीजी शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की मुक्ति पर विश्वास करते थे और उन्होंने भारतीय समाज के काम के प्रति राजनीतिक सामाजिक या विकास संबंधी गतिविधियों में महिलाओं के खिलाफ कोई भेदभाव नहीं किया। सामाजिक निरंकुशता और पुरुष वर्चस्व के कारण महिलाओं की दुर्दशा का गांधी को अच्छी तरह से पता था। गांधीजी ने महिलाओं की शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया, लेकिन वे जानते थे कि राष्ट्र-विशिष्ट लक्ष्यों को केवल शिक्षा द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वह न केवल महिलाओं, बल्कि पुरुषों की मुक्ति के लिए उचित कार्रवाई करने के पक्ष में थे। शिक्षा के बारे में उनके विचार कई समकालीनों से अलग थे और शिक्षा उनके गाँव पुनर्निर्माण में एक प्रमुख घटना थी और इसके माध्यम से राष्ट्र के पुनर्निर्माण का केवल एक हिस्सा था। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में भी गांधीजी का विशेष योगदान है। उनका आदर्श वाक्य था Establish शोषण के बिना समाज की स्थापना '। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। इसलिए, गांधीजी ने शिक्षा के उद्देश्यों और सिद्धांतों को समझाया और प्राथमिक शिक्षा योजना उनकी शिक्षा का एक मूर्त रूप है। इसलिए, एक शिक्षाविद् के रूप में उनकी शिक्षा भी उन्हें समाज के सामने प्रस्तुत करती है। शिक्षा के प्रति उनका योगदान अद्वितीय था। उनका मानना था कि भारत में बच्चों को 3भ् शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षा उन्हें आत्मनिर्भर बनाना चाहिए ताकि वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

शब्द कुंजीः *- महात्मा गांधी का परिचय, भारतीय शिक्षा का इतिहास, भारतीय शिक्षाविदों के विचार, शिक्षा दर्शन, वर्धा शिक्षा योजना, महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार, गांधी का महिला शिक्षा का विचार और गांधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता।*

ISSN-2230-7540

महात्मा गांधी का परिचय:-

मोहनदास करमचंद गांधीजी का जन्म *2* अक्टूबर *1896* को हुआ था। उनका निधन *30* जनवरी *1949* को हुआ था। वह भारत के एक प्रमुख राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के खिलाफ प्रतिशोध के अग्रणी नेता थे, इस अवधारणा की नींव कुल अहिंसा के सिद्धांत पर रखी गई थी जिसने भारत को स्वतंत्रता दी है और नागरिक अधिकारों और लोगों की स्वतंत्रता के आंदोलन के लिए। पूरी दुनिया में प्रेरित किया। उन्हें दुनिया में आम जनता द्वारा महात्मा गांधी के नाम से जाना जाता है। संस्कृत में, महात्मा या महान आत्मा एक सम्मानजनक शब्द है। गांधी को सर्वप्रथम *1915* में राजवैद्य जीवनराम कालिदास ने महात्मा के नाम से जाना था। उन्हें बापू (गुजराती भाषा में बीएयूपीयू बापू यानी पिता) के नाम से भी याद किया जाता है। सुभाष चंद्र बोस ने *8* जुलाई, *1979* को रंगून रेडियो से राष्ट्र के नाम के प्रसारण के नाम पर गांधीजी को संबोधित करते हुए, आजाद हिंद फौज के सैनिकों के लिए उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएं मांगी। हर साल *2* अक्टूबर को, उनके जन्मदिन को भारत में गांधी जयंती और पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। गांधी ने सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने के लिए एक प्रवासी वकील के रूप में सत्याग्रह शुरू किया। वह *1915* में भारत लौट आए। उन्होंने तब किसानों, मजदूरों और शहरी मजदूरों को एकजुट किया ताकि वे भूमि कर और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठा सकें। *1921* में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद, उन्होंने पूरे देश में गरीबी की राहत, महिलाओं के अधिकारों के विस्तार, धार्मिक और जातीय एकता के निर्माण और आत्मनिर्भरता के लिए अस्पृश्यता के विरोध में कई कार्यक्रम आयोजित किए। इन सभी में, स्वराज प्राप्त करने का कार्यक्रम विदेशी शासन का उद्धार था। गांधीजी ने *1930* में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर, नमक सत्याग्रह का विरोध किया और इसके बाद *1942* में अंग्रेजों ने भारत छोड़ दिया ।

उद्देश्य:-

1. महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का अध्ययन किया गया है।
2. महिला शिक्षा में महात्मा गांधी के योगदान की चर्चा की गई है।
3. महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

परिकल्पना:-

1. महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का समाज पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह: -

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। माध्यमिक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

भारतीय शिक्षा का इतिहास: -

शिक्षा का केंद्रः तक्षशिला का बौद्ध मठ भारतीय शिक्षा का इतिहास है, भारतीय सभ्यता का इतिहास भी। भारतीय समाज में विकास और परिवर्तनों के ढांचे में, शिक्षा का स्थान और उसकी भूमिका भी लगातार विकसित हो रही है। सूत्रकाल और लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक

ISSN-2230-7540

प्रणाली के बाद, हम बौद्ध शिक्षा को लगातार भौतिक और सामाजिक प्रतिबद्धता से भरे हुए देखते हैं। बौद्ध काल में, महिलाओं और शूद्रों को भी शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल किया गया था। प्राचीन भारत में निर्मित शिक्षा प्रणाली समकालीन दुनिया की शिक्षा प्रणाली से बेहतर और बेहतर थी, लेकिन समय के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली में गिरावट आई। विदेशियों ने यहां की शिक्षा प्रणाली को उस अनुपात में विकसित नहीं किया, जिस अनुपात में होना चाहिए था। अपने संक्रमण के दौरान, भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियाँ और समस्याएं हमारे सामने हैं जिनसे हमें निपटना है। भारत में गुरुकुल का प्रचलन *1750* तक जारी रहा, लेकिन मकोले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के परिवर्तन के कारण, भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली समाप्त हो गई और भारत में कई गुरुकुल टूट गए और उनके स्थान पर कान्वेंट और पब्लिक स्कूल खुल गए।

भारतीय शिक्षाविदों के विचार: -

शिक्षा आद्या शंकराचार्य (*6-720* ईस्वी), स्वामी दयानंद (*1826-1873*), स्वामी विवेकानंद (*1873-1972*), श्रीमती एनी बेसेंट (*18-1733*), गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर (*171-1961*), महामना पंडिता मदन मदन। (*1861-1965*), महात्मा गांधी (*179-1949*) और महर्षि अरविंद (*182-150*) आदि विचारक आधुनिक भारत के महान शिक्षाविद माने जाते हैं। वे अन्य विचारकों द्वारा अपनाई गई भारतीय शिक्षा से संबंधित विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां, भारतीय शिक्षाविदों की मुख्य विचारधारा का अवलोकन किया जाएगा और यह भी बताने की कोशिश की जाएगी कि भारतीय विचारकों के शिक्षा-संबंधी विचारों में मुख्य पश्चिमी शिक्षा दर्शन की छाप कितनी दूर तक पाई जाती है ।

शिक्षा दर्शन: -

गांधीजी एक महान शिक्षाविद-दार्शनिक भी थे। शिक्षा और दर्शन के बीच गहरा संबंध है। कई महान शिक्षाविद स्वयं महान दार्शनिक भी रहे हैं। इस सहसंबंध से दर्शन और शिक्षा दोनों की रुचि पूरी हुई। उस विषय के लिए दार्शनिक आधार की आवश्यकता शैक्षिक समस्या के प्रत्येक क्षेत्र में महसूस की जाती है। फ़हते ने अपनी पुस्तक *"*जर्मन नेशन को एड्रेस*"* में शिक्षा और दर्शन की अन्योन्याश्रयता का समर्थन करते हुए लिखा है - *"*दर्शन के अभाव में, *'*शिक्षण*'* कभी भी पूर्ण स्पष्टता प्राप्त नहीं कर सकता है। दोनों के बीच एक बातचीत जारी है और एक के बिना एक और अधूरा है। और अनुपयोगी। *"*दिवी ने शिक्षा और दर्शन के बीच के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहा कि दर्शन की सबसे गहरी परिभाषा यह हो सकती है कि *"*दर्शन शैक्षिक सिद्धांत का एक सामान्यीकृत रूप है। *"* दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, शिक्षा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के उपाय प्रस्तुत करती है। दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता पाठ्यक्रम की समस्याओं के संबंध में इतनी स्पष्ट और दृश्यमान नहीं है। विशिष्ट पाठ्यक्रम संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए दर्शनशास्त्र की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम से एक बारीकी से जुड़ा हुआ प्रश्न उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का विकल्प है और दर्शन भी इसमें अंतर्निहित है। जो भी पाठ्यक्रम से संबंधित है, वही बात शिक्षण के संबंध में भी कही जा सकती है। लक्ष्य विधि निर्धारित करते हैं, जबकि मानव लक्ष्य दर्शन का विषय है। शिक्षा के अन्य अंगों की तरह, दर्शन भी अनुशासन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूली अनुशासन का निर्धारण करने में राजनीतिक कारणों से मानवीय प्रकृति के संबंध में हमारी अवधारणा अधिक महत्वपूर्ण है। प्रकृतिवादी दार्शनिक नैतिक प्रवृत्ति की वैधता को अस्वीकार करता है। इसलिए, बच्चे की सहज प्रवृत्ति को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए छोड़ दिया जाता है; प्यूरिटन सामाजिक मान्यता के आधार पर इस तरह की कसौटी को खारिज करके बाल व्यवहार को नियंत्रित करने में विश्वास करता है; दूसरी ओर, आदर्शवादी नैतिक आदर्शों के सर्वोपरि प्रभाव को स्वीकार किए बिना मानव व्यवहार की व्याख्या को अधूरा मानता है, इसलिए वह इसे बच्चे द्वारा इन नैतिक आधारों को पहचानना और उन्हें इस तरह से प्रशिक्षित करना अपना कर्तव्य समझ सकता है। शिक्षा का उद्देश्य क्या है और इसका मानव जीवन के मूल उद्देश्य से क्या संबंध है, यह शिक्षा दर्शन का प्रश्न है। चीन के दार्शनिक शिक्षा का उद्देश्य नैतिकता में एक मानव होना और उसे राज्य का एक वफादार सेवक बनाना मानते थे। प्राचीन भारत में, सांसारिक कृतघ्नता और अन्य प्रकार के अनुष्ठानों और लौकिक विषयों की भावना थी, और यह सीखने का लक्ष्य था कि पारस से आत्मा की आत्मा की प्राप्ति हो। अध्यात्म और रावत तत्व को अपरा विद्या से सीखा गया था। पैरा विद्या को मनुष्य की रिहाई का साधन माना जाता था। गुरुकुलों और आचार्यकुल में निवासियों के लिए ब्रह्मचर्य, तप, सत्य व्रत आदि श्रेणियों की प्राप्ति दिव्य थी और तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला आदि जैसे विश्वविद्यालय प्राकृतिक विषयों के ज्ञान के अलावा विनम्र जीवन के महान अधीनस्थ थे। भारतीय शिक्षा दर्शन का आध्यात्मिक विमान नियम, नियम, अनुष्ठान आदि पर सदियों से लंबित था।

ISSN-2230-7540

वर्धा शिक्षा योजना: -

भारत के लिए महात्मा गांधी के योगदान में बुनियादी शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। इसे वर्धा योजना, नई तालीम, 'बेसिक शिक्षा' और 'बेसिक शिक्षा' के नामों से भी जाना जाता है। गांधीजी ने *23* अक्टूबर *1936* को एक 'नई तालीम' की योजना बनाई, जिसे देशव्यापी रूप दिया जाना था। उनके शैक्षिक विचार शिक्षाविदों के विचारों से मेल नहीं खाते थे, इसलिए उनके विचारों का शुरू में विरोध किया गया था। गांधीजी ने कहा था कि नए प्रशिक्षण का विचार भारत के लिए उनका अंतिम और सर्वश्रेष्ठ योगदान है। सत्य का पता लगाने और एक राष्ट्र का निर्माण करने के लिए सक्रिय प्रयोगों के माध्यम से विचारों की गांधीजी की लंबी मंथन, एक नए प्रशिक्षण दर्शन और प्रक्रिया के उद्भव के लिए नेतृत्व किया, जो न केवल भारत बल्कि पूरे नए मानव समाज को दिशा देने में सक्षम था। लेकिन दुर्भाग्य से इस सर्वोत्तम कल्याणकारी शिक्षा प्रणाली का राष्ट्रीय स्तर पर भी ठीक से उपयोग नहीं किया जा सका, जिसके कारण आज तक यह देश गांधी जी के सपनों के अनुरूप सार्थक और सही स्वराज हासिल नहीं कर पाया। बल्कि आज यह विपरीत है कि भारत शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पश्चिमी साम्राज्यवाद के तहत लगातार आगे बढ़ रहा है। आज, भारत की अधिकांश शिक्षा प्रणाली राज्य या पूंजीपतियों पर निर्भर है। संसाधनों और अनुशासन की कमी के कारण अधिकांश राज्य संचालित शैक्षणिक संस्थान दुविधापूर्ण हैं। इसलिए, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ हैं। इसी तरह, पूंजीपतियों पर निर्भर सभी शैक्षणिक संस्थान व्यावसायिक रूप से सक्रिय हैं, जो गरीबों की पहुंच से बाहर हैं। केवल अमीर लोगों के बच्चे ही उनमें अध्ययन कर सकते हैं। भारत की स्वतंत्रता के *40* से अधिक वर्षों के बाद भी, ऐसे बच्चों की संख्या जिन्होंने स्कूल में प्रवेश नहीं देखा है। जो लोग स्कूल जाने की क्षमता रखते हैं, उन्हें लॉर्ड मैकाले से अंग्रेजी शिक्षा की परंपरा के अलावा कुछ नहीं मिलता है। कुल मिलाकर, शायद ही किसी ने भारतीय बुनियादी शिक्षा पाई हो। ऐसा नहीं है कि भारतीय शिक्षकों की कमी है। लेकिन क्योंकि सभी माता-पिता के पास सरकारों या पूंजीपतियों द्वारा निर्धारित अंग्रेजी शिक्षा को छोड़ कर अपने बच्चों को भारतीय शिक्षा देने की इच्छाशक्ति और साहस नहीं है। जब तक आम जनता की इस कायरतापूर्ण मानसिकता को नहीं बदला जाएगा, तब तक इस देश में नए प्रशिक्षण सहित कोई भी भारतीय शैक्षणिक व्यवस्था नहीं पनप सकती है।

महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार:-

हम सभी जानते हैं कि गांधीजी ने देश के विकास से जुड़े कई बिंदुओं पर अपने विचार दुनिया के सामने रखे थे। उनमें से एक महत्वपूर्ण बिंदु भारत की शिक्षा प्रणाली थी। आज के युग में, शिक्षा में हम जिन समस्याओं या समस्याओं को महसूस कर रहे हैं, हमें गांधीजी की शिक्षा पर दिए गए गांधीजी के विचारों का कुछ समाधान मिल सकता है। आज, उनकी कई चीजें एक बड़े वर्ग द्वारा प्रासंगिक और महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं और धीरे-धीरे लोगों को उन विचारों का महत्व पता चल रहा है। अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में, हर व्यक्ति के स्वराज और आपसी सद्भाव, मशीनीकरण जैसे कई मुद्दों के बारे में बात करने के साथ-साथ, उन्होंने शिक्षा पर अपने विचार भी दिए जो उनके दक्षिण अफ्रीकी अनुभवों को भी प्रतिबिंबित करते थे और न केवल खाली विचार थे। उन्होंने कहा कि शिक्षा अंग्रेजों के पीछे भागने के लिए नहीं होनी चाहिए, उन्हें उनके घर परिवार से अलग करने के लिए या व्यावहारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक मूल्यों को विकसित करते हुए ज्ञान सीखने और सीखने के लिए मजबूर करने के लिए होनी चाहिए। कई विषयों (जैसे भूगोल, खगोल विज्ञान, बीजगणित, ज्यामिति आदि) का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि मैंने इन विषयों को पढ़ा लेकिन मुझे उनसे क्या हासिल हुआ? न ही इसने मेरे आसपास के लोगों के लिए अच्छा काम किया है। इस पुस्तक में, उन्होंने शिक्षा खंड में कई ऐसे मुद्दों को अच्छी तरह से उठाया और शायद यही कारण है कि बाद में *1937* में ये विचार नए प्रशिक्षण के रूप में सामने आए। गांधीजी के नए प्रशिक्षण में उनकी मातृभाषा में बच्चों को पढ़ाने पर जोर दिया गया है, उनके विचार में, बच्चों को उनके घर से दूर ले जाना वास्तविक शिक्षा के साथ दूर करना है क्योंकि स्कूल से बड़ा कुछ भी नहीं है। यह नैतिकता पर जोर देते हुए शिक्षा द्वारा सहयोग की भावना विकसित करने और धार्मिक, जातिगत भेदभाव और द्वेष को समाप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण बिंदु है। उनके अनुसार, शिक्षा को उसके द्वारा देखे गए अनुभवों के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए, जिसमें बच्चे को उसकी जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक किया जाता है और उसे हर कार्य के लिए समान सम्मान देने या ऐसा वातावरण देने के लिए कहा जाना चाहिए उसे इन सभी चीजों को लागू करके शिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षा में रोजगार पैदा करने के कौशल को सिखाया जाना चाहिए और बच्चों को शिल्प और अन्य प्रकार के व्यावसायिक कौशल सिखाना चाहिए। आजादी के बाद भी नई शिक्षा या गांधीजी के शैक्षिक विचारों को ज्यादा तरजीह क्यों नहीं मिली, यह बहुत चर्चा का विषय है और इसकी तह तक जाने की कोशिश न करते हुए उनके विचारों के महत्व को समझने का बहुत कम प्रयास है। और लेख में विचारों की झलक

ISSN-2230-7540

दिखाने की कोशिश है ।

गाँधी जी की महिला शिक्षा का विचार:-

'यदि आप एक आदमी को पढ़ाते हैं, तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा। यदि आप एक महिला को पढ़ाते हैं, तो पूरा परिवार शिक्षित होगा। "गांधीजी शिक्षा के माध्यम से महिलाओं की मुक्ति पर विश्वास करते थे और उन्होंने भारतीय समाज के काम के प्रति राजनीतिक सामाजिक या विकास संबंधी गतिविधियों में महिलाओं के खिलाफ कोई भेदभाव नहीं किया। सामाजिक निरंकुशता और पुरुष वर्चस्व के कारण महिलाओं की दुर्दशा का गांधी को अच्छी तरह से पता था। गांधीजी ने महिलाओं की शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया, लेकिन वे जानते थे कि राष्ट्र-विशिष्ट लक्ष्यों को केवल शिक्षा द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। वह न केवल महिलाओं, बल्कि पुरुषों की मुक्ति के लिए उचित कार्रवाई करने के पक्ष में थे। शिक्षा के बारे में उनके विचार कई समकालीनों से अलग थे और शिक्षा उनके गाँव पुनर्निर्माण में एक प्रमुख घटना थी और इसके माध्यम से राष्ट्र के पुनर्निर्माण का केवल एक हिस्सा था। उन्होंने एक बार कहा था कि महिलाओं की शिक्षा केवल अपराधी नहीं है, हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली खराब है। वह शहरों और कस्बों में रहने वाले लोगों के लिए महत्वपूर्ण थे, जो आबादी के *10* से *15* प्रतिशत का गठन करते हैं, और हर चीज में लिंग भेदभाव को बढ़ावा देते हैं। *23* मई *1929* को यंग इंडिया में लिखे गए गांधीजी के एक लेख से पता चलता है कि वह अशिक्षा, स्कूल की सुविधाओं की कमी, ज़मींदारों के शोषण और ग्रामीण महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले ऐसे अन्य सामाजिक आर्थिक विकलांगों के बारे में कितना जानते थे। करना पड़ेगा। उन्होंने लिखा कि यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए और इसे व्यापक आबादी को ध्यान में रखते हुए तय किया जाना चाहिए। उनके अनुसार, बच्चों के साथ वयस्क शिक्षा को केवल शिक्षा प्रणाली में ही महत्व नहीं दिया जा सकता है ।

उनके अनुसार, बच्चों के साथ वयस्क शिक्षा पर जोर नहीं देने वाली शिक्षा प्रणाली उचित नहीं हो सकती। भारत में कुछ शिक्षित महिलाएं हैं, उन्हें पश्चिमी ऊंचाइयों से नीचे आना पड़ा और देश के मैदानी इलाकों में आना पड़ा। पुरुष निश्चित रूप से अपनी उपेक्षा के लिए जिम्मेदार हैं, उन्होंने महिलाओं को गलत तरीके से इस्तेमाल किया है, लेकिन जो महिलाएं अंधविश्वास से ऊपर उठ गई हैं, उन्हें सुधार के लिए रचनात्मक कार्य करना होगा।

गांधीजी के अनुसार, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो लड़कों और लड़कियों को खुद के प्रति अधिक संवेदनशील बना सके और एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना पैदा कर सके। महिलाओं के पास खुद को पुरुषों का दास या पुरुषों से हीन समझने का कोई कारण नहीं है, उनकी एक अलग पहचान नहीं है, लेकिन केवल एक शक्ति है। इसलिए, महिलाओं को सभी अवांछित और अनुचित दबावों के खिलाफ विद्रोह करने की सलाह दी जाती है। इस तरह के विद्रोह से किसी तरह के नुकसान की उम्मीद नहीं है। इससे तर्कसंगत प्रतिरोध होगा और शुद्धता आएगी।

हालाँकि, भारतीय परंपरा में आमतौर पर महिलाओं का सम्मान किया जाता है और शायद भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जहाँ करोड़ों लोग अर्धनारीश्वर की पूजा करते हैं और जहाँ मनु यह घोषणा करते हैं कि जहाँ महिला का सम्मान किया जाता है वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। यह सच है कि भारतीय महिलाएं अभी भी काफी हद तक अनपढ़ और अशिक्षित हैं और संसद या विधानसभाओं में अपनी आवाज उठाने में असमर्थ हैं। महान चिंतक और राजनेता, "महान महिला भारत" की भूमिका में, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने कहा है - "यह अधिक महत्वपूर्ण है कि तथ्य यह है कि हम मनुष्य हैं और भौतिक विशेषताएँ नहीं हैं जो हमें प्रत्येक से अलग करती हैं अन्य।"

गांधीजी के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता:-

गांधीजी हमेशा शांति से शिक्षा को देखते थे। शिक्षा तब तक अधूरी रहेगी जब तक लोग समाज के हित में काम करना और दूसरों के साथ शांति से रहना सीख सकते हैं। आज भी कई स्कूलों में शांति शिक्षा (पीस एजुकेशन) चलाई जाती है, यह बड़े संस्थानों (यूएन आदि) और शांति के दार्शनिक तत्वों के बारे में बताने तक सीमित है, लेकिन बच्चों के दैनिक जीवन और काम में निश्चित रूप से कमी है इसे सम्मिलित करें। छात्र अध्ययन करते हैं और एक बड़ी डिग्री लेते हैं लेकिन वे अक्सर सामाजिक चिंताओं से कट जाते हैं, न केवल अपने साथी के साथ कैसे व्यवहार करें, सद्भाव और समन्वय के साथ लोगों के साथ कैसे रहें। लोगों के कई उदाहरण मिल जाएंगे।

बच्चों के भीतर विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना को आज जगाया और विकसित किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण

ISSN-2230-7540

अपनाने से जब तक छात्रों में सही और गलत को पहचानने का कौशल विकसित नहीं होता है, तब तक शायद शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधूरा रहेगा। आज के दौर में, हमें छात्रों के सामने नए तरीके से नैतिकता रखनी होगी और सिर्फ उपदेश देकर नहीं, ऐसे कई नए तरीके *N c Fk 2005* के *N-C-C- Er* में दिए गए थे। टी द्वारा निकाली गई शांति के लिए शिक्षा को विषय के पेपर (फोकस पेपर) में जगह दी गई है। यह संभव है कि गांधीजी के कई विचार आज के समय में अप्रासंगिक लग सकते हैं, या हम उनके व्यक्तित्व के राजनीतिक पहलुओं में अपनी मानसिकता या विचार नहीं देख सकते हैं, फिर भी शिक्षा में दिए गए उनके विचारों को एक बार फिर से समझने और प्रचारित करने की आवश्यकता है। भले ही कुछ चीजें बहुत आदर्शवादी या विरोधाभासी लगती हों, यहां तक कि एक बार (जो भी शिक्षा में कुछ सकारात्मक बदलाव चाहता है), हमें उनके विचारों को देखना चाहिए।

सरकारी और निजी संस्थानों के घरों में रहने वाली व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित महिलाओं को सेवाओं का लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। रोजगार के पारंपरिक नियमों, काम के घंटे आदि को बदलना होगा ताकि काम के इच्छुक महिलाओं की विशेष आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। कार्य स्थलों पर शिशुओं को रखने की व्यवस्था भी की जा सकती है। ऐसी कामकाजी महिलाओं को परिवहन सुविधा भी प्रदान की जा सकती है।

गांधीजी के विचारों को ध्यान में रखते हुए, पहला कदम शिक्षा को निचले स्तर के पेशेवर बनाना होगा। स्कूल स्तर पर महिलाओं को विशेष कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है। हमें लाखों स्वास्थ्य कर्मचारियों की जरूरत है। प्रशिक्षण का एक विशेष पाठ्यक्रम ऊपरी मध्य विद्यालय से वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक डिज़ाइन किया जा सकता है। कंप्यूटर शिक्षा भी निचले स्तर से शुरू की जा सकती है। जब तक एक लड़का या लड़की उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर लेते, उन्हें रोजगार के लिए कुशल बनाया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर, पुस्तक शिक्षा की मात्रा कम की जा सकती है, व्यवसाय उन्मुख जानकारी और स्कूल पुस्तकालय, प्रयोगशाला प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। यदि अधिक प्रशिक्षण सुविधाओं की आवश्यकता है, तो स्थानीय निगम भावी कर्मचारियों को प्रशिक्षण सहायता प्रदान करने के लिए आगे आ सकते हैं।

स्कूलों और कॉलेजों में डिजाइनिंग, ड्रॉइंग, प्राइमरी हेल्थ केयर, मिडवाइफरी, होम इकोनॉमिक्स, लाइब्रेरी, साइंस डेटा, प्रोसेसिंग, बुजुर्गों की देखभाल, विज्ञापन कॉपी राइटिंग, स्टैटिस्टिक्स, सेनेटोग्राफी, हॉर्टिकल्चर और मैरिड, जहां गर्ल्स और वुमन आउटबाउंड करना चाहते हैं, ऐसे दूसरे कोर्स शुरू करने होंगे, जो विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, ताकि देश को अगली शताब्दी की चुनौतियों का सामना करना पड़े। इन नए प्रशिक्षणों को मानविकी, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में पारंपरिक पाठ्यक्रमों के साथ उचित रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

भारतीय महिला की क्षमता किसी भी विकासशील देश की महिला से कम नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि जहां विकासशील देशों में महिलाओं को पुरुषों की तरह लगभग हर क्षेत्र में समान अवसर हैं, वहीं भारतीय महिलाओं को अवसरों की कमी है। यद्यपि संविधान ने महिलाओं और पुरुषों को सिद्धांत रूप में समान अधिकार दिए हैं, लेकिन व्यवहार में यह मामला नहीं है और कई सामाजिक बाधाएं उनके विकास में बाधा डालती हैं। इसलिए, महिलाओं को व्यावहारिक रूप से समान अधिकार मिलना चाहिए। लेकिन साथ ही हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। महिलाओं की शिक्षा में भी, हमें उनकी व्यावहारिक कठिनाइयों पर ध्यान देना होगा जो शिक्षा के हर स्तर पर आती हैं। उनकी शिक्षा, पाठ्यक्रम आदि के निर्धारण में महिला जाति की प्राकृतिक जरूरतों का ध्यान रखना होगा। स्त्री और पुरुष के लिए एक ही प्रकार के पाठ्यक्रम का निर्धारण करने से उनका समुचित विकास नहीं होगा। शिक्षा के क्षेत्र में, सह-शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा स्तर तक भी दिया जा सकता है। लेकिन यह बेहतर होना चाहिए कि पूरे देश में अधिक से अधिक गर्ल्स स्कूल खोले जाएं।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि गांधीजी ने देश के विकास पर अपने विचार समाज के सामने रखे थे। उनमें से एक महत्वपूर्ण बिंदु भारत की शिक्षा प्रणाली थी। आज, शायद शिक्षा में हम जो कुछ समस्याएं महसूस कर रहे हैं, उन्हें शिक्षा के बारे में गांधीजी के विचारों के माध्यम से पाया जा सकता है। आज लोग उनकी कई बातों और विचारों का महत्व जान रहे हैं। वर्तमान में, भारतीय महिला परिवार, समुदाय और समाज में

ISSN-2230-7540

उत्साहपूर्वक अपनी भूमिका निभा रही है, साथ ही साथ सामाजिक जीवन में उसके काम और जीवन की स्थितियों में सुधार हो रहा है। महिलाएं शिक्षा द्वारा सामाजिक, आर्थिक और मानसिक रूप से खुद को मुक्त कर सकेंगी। महिलाओं को उठाना पूरे समाज की जिम्मेदारी है। इसके लिए पूरे समाज को जागृत करने की आवश्यकता है, क्योंकि उनकी समस्याएं पूरे समाज से जुड़ी हैं। इसलिए महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन को इस दिशा में अपनाया जाना चाहिए तभी हम सभी मिलकर समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

1. महात्मा गांधी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी के शिक्षा विचार।
2. मोहनदास करमचंद गांधी, सत्य के प्रयोग, साक्षी प्रकाशन दिल्ली।
3. फिशर लुइस, द लाइफ ऑफ महात्मा गांधी, लंदन *1952*।
4. गांधी महात्मा, महात्मा गांधी के चयनित कार्य, खंड *-4* चयनित पत्र, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद *1968*।
5. मूर्ति, वी. रमना, गांधी आवश्यक लेखन, गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
6. दत्त, डॉ. डी.के., महात्मा गांधी, नई दिल्ली के सामाजिक नैतिक और धार्मिक दर्शन।
7. सक्सेना, डॉ. केएसः गांधी शताब्दी पेपर्स, द पब्लिकेशंस डिवीजन काउंसिल ऑफ ओरिएंटल रिसर्च भपेल
8. गांधी, मोहन दास करमचंद, मेरे सपनों का भारत, भार्गव भूषण पैंस, वाराणसी।
9. सीता रमईया वी.पी., गांधी और गांधीवाद भाग *2*, इलाहाबाद।
10. भट्टाचार्य, प्रभातः गांधी दर्शन, नई दिल्ली।
11. प्यारेलाल, आधुनिक दुनिया में गांधी के काम करने के तरीके, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद
12. पांडे बीएन, महात्मा गांधीः व्यापक सोच, गांधीजी दर्शन समिति, नई दिल्ली।
13. पाठक पीडी, भारतीय शिक्षा और इसकी समस्याएं, विनोद पुष्पक मंदिर, आगरा।

Corresponding Author

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan